समकालीन प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में व्यक्त दलित विमर्श

SAMAKALEEN PRAMUKH HINDI DALIT MAHILA KATHA SAHITYA MEIN VYAKTH DALIT VIMARSHA

मंगलूर विश्वविद्यालय की ओर से पीएच.डी. (हिन्दी) उपाधि के लिए प्रस्तुत शोध-प्रबंध की अंतिम रूपरेखा

FINAL SYNOPSIS OF THE THESIS SUBMITTED TO MANGALORE UNIVERSITY FOR THE AWARD OF THE DEGREE OF DOCTOR OF PHILOSOPHY IN HINDI

शोध निर्देशिका

डॉ. सुमा टी. रोडनवर

प्राध्यापिका, हिन्दी विभाग
विश्वविद्यालय कॉलेज, मंगळूरु.

शोधार्थी

बिष्टप्पा तळवार

नामांकन संख्या: 166302703

सह प्राध्यापक, हिन्दी विभाग
एफ्.एम्.के.एम्.सी. कॉलेज, मडिकेरी.

Research Guide
Dr. Suma T. Rodanavar
Professor
Department of Hindi
University College, Mangalore.

Research Scholar
Bistappa Talawar
Reg. No.: 166302703
Associate Professor
Department of Hindi
FMKMC College, Madikeri.

हिन्दी विभाग, स्नातकोत्तर हिन्दी अध्ययन एवं शोध केन्द्र

विश्वविध्यालय कॉलेज, मंगलूर

DEPARTMENT OF POSTGRADUATE STUDIES & RESEARCH IN HINDI
UNIVERSITY COLLEGE, MANGALORE.

जनवरी 2025

प्राक्कथन

समकालीन प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में व्यक्त दलित विमर्श

प्रस्तावना

साहित्य किसी समाज की ज्ञान राशि का संचित कोश होता है। वह समाज के लिए एक दिव्यानुभूति प्रदान करनेवाली शक्ति है। साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है और यही किसी समाज की जीवंतता को प्रमाणित करनेवाला प्राणतत्व माना जा सकता है। साहित्य किसी विषय या घटना का मोहताज नहीं होता है, वह मूलतः मनुष्य की भावनाओं पर आधारित होता है। कोई भी असंवेदनशील व्यक्ति साहित्य को समझ भी नहीं सकता। कोई भी साहित्यकार सत्य तथा तथ्य को बताने के लिए मनुष्य साहित्य का निर्माण करता है।

सदियों से साहित्य में चले आ रहे विषयों से हट कर आधुनिक हिंदी साहित्य अब नए विषयों को भी अपने अंदर समाहित करता आ रहा है। इक्कीसवीं सदी में साहित्य का विषय इतना विस्तृत हो गया है कि इस ने समाज के किसी पहलू को बाकी नहीं रखा। अब साहित्य में राजा महाराजाओं के पराक्रम तथा पौराणिक कथाओं की जगह सामाजिक समस्याओं ने ले ली है। अब साहित्य लिखा जाता है आधुनिक नारी, दलितों, आदिवासियों, अल्पसंख्यकों, सदियों से हाशिये पर ढकेले गए किन्नर समाज तथा खुद को हाशिये पर स्थानांतरित वृद्ध समाज पर।

आधुनिक काल में दलितों पर केंद्र में रख कर बहुत लिखा जा रहा है किंतु दलित महिला लेखन अपनी अलग पहचान रखता है। जिससे आकर्षित होकर मैंने अपना शोध का विषय चुना है- “**समकालीन प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में व्यक्त दलित विमर्श**”

इसमें महिला साहित्यकारों के कथा साहित्य को विमर्श के आईने से देखने का प्रयास किया जाएगा।

वैसे तो दलित लेखन में अधिकतर पुरुष लेखन का ही वर्चस्व रहा है किंतु इक्कीसवीं सदी में जहाँ महिला लेखन सशक्त हुआ है, वहीं दलित महिला साहित्यकार कैसे पीछे छोड सकती हैं अतः उनके लेखन पर कार्य करने से हिंदी साहित्य में योगदान देने की आशा की जा सकती है।

शोध की आवश्यकता एवं उद्देश्य

हिंदी साहित्य में दलित लेखन केवल पुरुषों ने ही नहीं लिखा बल्कि महिला दलित साहित्य भी उतनी ही मात्रा में देखा जा सकता है। दलित साहित्य सृजन में दलित लेखकों व कवियों का जितना योगदान है, उतना ही महत्वपूर्ण योगदान दलित महिला साहित्यकारों का भी है। इन नामों में सुशीला ठाकभौरे, अनीता भारती और रजत रानी ‘ मीनू’ जी का नाम आदर के साथ लिया जा सकता है क्योंकि महिला दलित लेखन को उन्हीं के लेखन ने परवाज़ दी है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में दलित महिला लेखिकाओं की कहानियों एवं उपन्यासों का विश्लेषण, विवेचन किया जाएगा। ज्योंकि उपन्यासों की तुलना कहानियों की संख्या अधिक है इसलिए केवल बहुचर्चित कहानियों पर अध्याय को सीमित किया गया है।

शोध कार्य की पद्धति

शीर्षक से ही यह ज्ञात होता है कि सम्पूर्ण शोध-कार्य विवरणात्मक, विश्लेषणात्मक, प्रश्नात्मक तथा आलोचनात्मक कार्य-विधि पर आधारित है। अतः इसमें दलित महिला लेखिकाओं द्वारा लिखे गए साहित्य पर अध्ययन किया गया है।

शोध विषय की सीमा एवं व्याप्ति

शोधकार्य की सीमाओं के विषय में बताया जाए तो विषय सामग्री की उपलब्धि के अनुसार महिला कथा साहित्य का अध्ययन किया है। जैसे-

- दस महिला कथाकारों पर अपने शोधकार्य को सीमित रखा।
- शोधनिबंध में केवल सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व धार्मिक जीवन का ही चित्रण किया गया है।
- शोधकार्य में केवल कहानियों और उपन्यासों का समावेश किया गया है।
- केवल समकालीन दलित लेखिकाओं के कथा साहित्य को समाहित किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध "**समकालीन प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में व्यक्त दलित विमर्श**" शीर्षक से कुल पांच अध्याय में संपन्न हुआ है। अध्ययन की सुविधा एवं योजना बद्धता को दृष्टि में रखकर शोध प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित कर शोध-विषय का विवेचन-विश्लेषण किया है और यथा स्थान पर निष्कर्ष एवं उपलब्धियां को दर्ज किया है।

प्रथम अध्याय

"दलित साहित्य की भूमिका एवं दलित विमर्श" जिसमें मैंने दलित शब्द की उत्पत्ति से लेकर दलित साहित्य की परिभाषा, उद्भव एवं विकास पर प्रकाश डालने का प्रयास किया है। साथ ही दलित आंदोलन का आरंभ और उससे जुडे विद्वानों और उनके कार्यों का भी विवेचन किया है। इसी अध्याय में दलित विमर्श पर भी गहरा अध्ययन किया गया है।

द्वितीय अध्याय

"**समकालीन हिंदी दलित महिला कथा साहित्य का कथ्य विश्लेषण**" जिसमें दलित महिला लखिकाओं की कहानियों और उपन्यासों का कथ्यगत विश्लेषण करने का प्रयास किया है जिसमें कथावस्तु और कथ्य का अध्ययन किया गया है।

तृतीय अध्याय

"**प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में अभिव्यक्त दलित विमर्श**" इस अध्याय में दलित महिला लेखिकाओं द्वारा रचित कहानियों में चित्रित सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक जीवन का अध्ययन किया गया है। और यह जानने का प्रयास किया गया है कि आज के समय में दलित कथा साहित्य में चित्रित दलित जीवन कैसा है।

चतुर्थ अध्याय

"**समकालीन हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में चित्रित नारी संघर्ष**" जिसमें दलित लेखिकाओं के कथा साहित्य में चित्रित स्त्री की दशा, उसका शोषण, विद्रोह, दलित नारी की शिक्षा एवं परिवार में उसके स्थान को बताने के साथ-साथ कामकाजी दलित नारी का भी चित्रण किया गया है।

पंचम अध्याय

"**दलित महिला कथा साहित्य : भाषा शैली**" इस अध्याय में दलित महिला साहित्यकारों द्वारा प्रयुक्त की गई भाषा, उनकी शैली पर विचार किया गया है। उनके द्वारा प्रयुक्त भाषा को समझने और उसके प्रयोग का भी आकलन किया गया है।

सभी अध्यायों के बाद मेरी शोध का निचोड उपसंहार के रूप में प्रस्तुत किया है। उक्त विष की विषयानुक्रमणिका इस प्रकार है-

विषयानुक्रमणिका

समकालीन प्रमुख हिंदी दलित महिला कथा साहित्य में व्यक्त दलित विमर्श

प्राक्कथन

प्रथम अध्याय :

दलित साहित्य की भूमिका एवं दलित विमर्श

1.0 प्रस्तावना

1.1 दलित शब्द की उत्पत्ति

1.2 'दलित' शाब्दिक अर्थ और परिभाषा

1.3 दलित विमर्श का अर्थ और परिभाषा

1.4 दलित विमर्श : अवधारणा एवं स्वरूप

1.5 दलित साहित्य का उद्भव एवं विकास

1.6 समकालीन दलित हिंदी कथा साहित्य

1.7 निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय :

प्रमुख दलित महिला कथा साहित्य का कथ्य विश्लेषण

2.0 प्रस्तावना

2.1 कहानी साहित्य

2.2 उपन्यास साहित्य

2.3 निष्कर्ष

तृतीय अध्याय :

प्रमुख दलित महिला कथा साहित्य में अभिव्यक्त दलित विमर्श

3.0 प्रस्तावना

3.1 कहानियों में दलित विमर्श

3.2 उपन्यासों में दलित विमर्श

3.3 निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय :

प्रमुख दलित महिला कथा साहित्य में अभिव्यक्त नारी संघर्ष

4.0 प्रस्तावना

4.1 दलित स्त्री की दशा

4.2 रूढ़ि ग्रस्त समाज और दलित स्त्री

4.3 शोषण

4.4 विद्रोह

4.5 दलित परिवार में नारी का स्थान

4.6 शिक्षा एवं दलित नारी

4.7 कामकाजी व आत्मनिर्भर दलित नारी

4.8 निष्कर्ष

पंचम अध्याय :

दलित महिला कथा साहित्य : भाषा शैली

5.0 प्रस्तावना

5.1 हिंदी दलित महिला कथा साहित्य की भाषा

5.2 हिंदी दलित महिला कथा साहित्य की शैली

5.3 निष्कर्ष

❖ **उपसंहार**

❖ **उपलब्धियाँ, सीमाएं और संभावनाएं**

❖ **परिशिष्ट -1**

१. आधारग्रंथ सूची

२. संदर्भ / सहायक ग्रंथ

३. पत्रिकाएं

४. अंतर्जाल

५. शब्दकोश

६. शोध निबंध

❖ **परिशिष्ट - 2: हिंदी के प्रमुख दलित महिला लेखिकाओं का परिचय**

❖ **परिशिष्ट - 3: प्रकाशित शोध-आलेख**

❖ **परिशिष्ट - 4: संगोष्ठी में भाग लिए हुए प्रमाण पत्र**

मार्गदर्शिका
डॉ. सुमा टी. रोडनवर
प्राध्यापिका
विश्वविद्यालय कॉलेज
मंगळूरु

शोधार्थी
बिष्टप्पा तळवार
सह प्राध्यापक
एफ.एम.के.एम.सी कॉलेज
मडिकेरी